# कथा सरिता

## दुश्मन कौन ?

एक दोपहर जब एक बड़ी कंपनी के कर्मचारी लंच टाइम से वापस लौटे, तो उन्होने नोटिस बोर्ड पर एक सूचना देखी। उसमें लिखा था कि कल उनका एक साथी गुजर गया, जो उनकी तरक्की को रोक रहा था। कर्मचारियों को उसे श्रद्धांजलि देने के लिए बुलाया गया था। श्रद्धांजलि सभा कम्पनी के मीटिंग हॉल में रखी गई थी।

पहले तो लोगों को यह जानकर दुख हुआ कि उनका एक साथी नहीं रहा, फिर वो उत्सुकता से सोचने लगे कि आखिर वह कौन हो सकता है। धीरे-धीरे कर्मचारी हॉल में जमा होने लगे। सबके होठों पर एक ही सवाल था, आखिर वह कौन है, जो हमारी तरक्की की राह में बाधा बन रहा था। चलो, राहत की बात है कि अब वह नहीं रहा। जैसा कि होता है, लोग किसी के गुजर जाने के बाद उसकी बुराइयां भूल जाते हैं, सभी उसके जाने का अफसोस करने लगे।

हॉल में दरी बिछी थी और दीवार से कुछ पहले पर्दा लगा हुआ था। वहां एक और सूचना चिपका दी गई थी कि गुजरने वाले की तस्वीर पर्दे के पीछे दीवार पर लगी है। सभी एक-एक करके पर्दे के पीछे जाएं, उसे श्रद्धांजलि दें और फिर तरक्की की राह पर अपने कदम बढ़ाएं, क्योंकि उनकी राह रोकने वाला अब पता चल चला गया। कर्मचारियों के चेहरों पर हैरानी का भाव था।

कर्मचारी एक-एक करके पर्दे के पीछे की ओर जाते और जब वे दीवार पर टंगी तस्वीर देखते, तो अवाक रह जाते। उनके मुंह से बोल ही न फूटते। दरअसल, दीवार पर तस्वीर की जगह एक आईना टंगा था। उसके नीचे एक पर्ची लगी थी, जिसमें लिखा था, 'दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति है, जो आपकी तरक्की को रोक सकता है, आपको सीमाओं में बांध सकता है। और वह आप खुद हैं।' हॉल के बाहर बॉस कर्मचारियों का स्वागत कर रहा था इन शब्दों से कर रहा था, ''अपने नकारात्मक हिस्से को श्रद्धांजलि दे चुके नये साथियों का स्वागत है।''

**शिक्षा -दुनिया में आपके सबसे बड़े दुश्मन हैं आपके खुद के नकारात्मक विचार और आपके द्वारा पाली गई कमजोरियां। तमाम नकारात्मक भावों और कमजोरियों को दफना दें और तरक्की की राह पर बढ़ चलें। फिर दुनिया की कोई भी ताकत आपको सफल होने से नहीं रोक सकती।**

## जैसी करनी..

किसी दौर में एक अत्याचारी राजा हुआ। वह जनता पर बड़ा जुल्म करता। अपनी ऐशोआराम के लिए गरीब जनता से कर वसूल करता। उसके अन्याय और अत्याचार से पीड़ित जनता दिन-रात उसे बद्दुआएं देती और उसकी मृत्यु की कामना करती थी।

एक दिन अचानक राजा ने बकायदा घोषणा करवा दी कि वह अब से न्याय करेगा। किसी पर किसी तरह का अत्याचार न होगा। सभी प्रजाजन को उनके जान-माल की सुरक्षा प्राप्त होगी। शुरू-शुरू में किसी को भी निर्दयी राजा की इस बात पर बिल्कुल भरोसा न हुआ। काफी समय तक जब सब कुछ राजा के वचन अनुसार ही सब कुछ ठीक चलता रहा, तो प्रजा को राजा के बारे में अपनी धारणा बदलनी पड़ी। अब अत्याचारी राजा सबके मान-सम्मान का पात्र बन गया। उसे आदर्श राजा माना जाने लगा।

इतना सब हो जाने के बाद भी यह रहस्य बना रहा कि आखिर ऐसे अत्याचारी राजा का हृदय परिवर्तन कैसे हो गया ? आखिर वह क्या बात है, जिसने राजा के जीवन में ऐसा क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। मंत्रीगण ने आखिर राजा से यह सवाल पूछ ही लिया।

राजा सवाल सुनकर मुस्करा दिए। उन्होने कहा, 'मैं जानता था कि सारे लोग -मेरी प्रजा, मेरा परिवार और आप सभी मेरे परिवर्तन से अचंभित हैं। हुआ कुछ इस तरह कि एक दिन मैं शिकार के लिए जंगल गया। वहां मैने पाया कि एक कुत्ता एक मासूम हिरन के पीछे पड़ गया। हिरन ने भागकर किसी तरह अपनी जान बचा ली। मगर फिर भी कुत्ते ने उसे घायल कर दिया। वापसी में मेरा एक गांव से गुजरना हुआ। वहां एक बार फिर मुझे वही कुत्ता दिखाई दिया। वह एक आदमी पर भौंक रहा था। उस आदमी ने एक बड़ा पत्थर उठाकर इतनी जोर से मारा कि उस कुत्ते की टांग टूट गई। वह आदमी अभी थोड़ी दूर गया था कि एक घोड़े ने उसको ऐसी लात मारी कि उसके घुटने टूट गये। घोड़ा लात मारकर दूसरी तरफ भागा, तो सीधा एक गड्ढे में जा गिरा और उसकी टांग टूट गई। यह सब देखकर मेरे मन में विचार आया कि मुझे भी आज नहीं तो कल, अपने अत्याचारों के बदले अत्याचार का शिकार होना ही होगा। इसलिए मैंने सोचा कि बेहतर होगा, अगर मैं अच्छे काम करूं। तब मैं उसके बदले शायद कुछ अच्छा भी पा सकूं।

**शिक्षा -इस दुनिया में सभी को राजा की तरह एक जगह, एक साथ सच की पूरी तस्वीर एक साथ दिखाई दे जाए, यह जरूरी नहीं। मगर राजा की बात से सच समझ में आ जाए, यह जरूर हो सकता है।**

## आलस्य

एक बार माया का मन अपने काम से ऊबा तो उसने सन्यास लेने की ठानी। अपनी सारी सम्पत्ति और सवारियां उसने बेचना शुरू कर दिया। हाट के दिन झुंड के झुंड लोग आए और उन्हें खरीदने लगे।

नशेबाजी, चुगली, ईर्ष्या, बेईमानी, कुढ़न, जल्दबाजी, बदहवासी जैसी चीजें लोगों को खूब पसंद आईं और उन्होने मनमाने दाम देकर इन्हें खरीदा। जो न खरीद सके, वे हाथ मलते रह गए।

देखते-देखते माया का सारा असबाब बिक गया। अब उसके पास एक ही चीज बची, जिसे वह बेचना न चाहता था। खरीददारों में से एक ने कहा, ''जब आप सब कुछ छोड़ रहे हैं तो इस एक चीज से ममता क्यों ? इसे भी बेचकर निश्चिंत हो जाइए न!''

माया ने कहा, ''यह मेरी सबसे प्रिय, कीमती और करामाती चीज है। जो कुछ मैंने बेचा, वह इसके जरिए मैं दुबारा हासिल कर सकता हूँ। सन्यास में भी मन न लगा तो इसी के सहारे अपना करोबार फिर शुरू करूंगा। इसे बेच दूंगा तो मेरा अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।''

उत्सुक लोगों ने माया से पूछा, ''कृपया इस वस्तु का नाम तो बता दीजिए।'' माया ने गर्व के साथ कहा, 'यह है आलस्य। आलस्य के रहते वह सब मिलता ही रहेगा जो मैं चाहता हूँ।' आलस्य के अवगुण से ही सारे अवगुणों को वापिस लाया जा सकता है। इसलिए आलस्य का त्याग अत्यंत आवश्यक है।

**शिक्षा -आलस्य सर्व दुर्गुणों का बीज है।**

## बन्धन

सूफी संत फरीद अपने शिष्यों के साथ एक गांव से गुजर रहे थे। वहीं रास्ते में एक आदमी अपनी गाय को रस्सी से बांधे लिए जा रहा था। फरीद ने उस आदमी से थोड़ी देर रूकने की प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना पर वह रूक गया। अब संत फरीद ने अपने शिष्यों से पूछा, 'इन दोनों में मालिक कौन है -गाय या आदमी ?' शिष्यों ने कहा, 'यह भी कोई बात हुई, जाहिर है, आदमी गाय का मालिक है।' फरीद ने फिर कहा, 'यदि गाय के गले की रस्सी काट दी जाए तो कौन किसके पीछे दौड़ेगा -गाय आदमी के पीछे या फिर आदमी गाय के पीछे।' शिष्यों ने कहा, 'जाहिर है, आदमी गाय के पीछे भागेगा।' 'तो फिर मालिक कौन हुआ ?' फरीद ने शिष्यों से कहा, 'यह जो रस्सी तुम्हें दिखाई पड़ती है गाय के गले में, यह दरअसल आदमी के गले में है। आत्मा की सम्पत्ति को छोड़कर बाकी हर सम्पत्ति हमारे गले का फंदा बन जाती है।' यथार्थ में आत्मसंपदा ही सच्ची सम्पदा है। सच्चे शिष्य ही इसे पाने में समर्थ होते हैं।

**शिक्षा - आध्यात्मिक पथ के राही को बाहरी व आंतरिक रूप से आकर्षण में बांधने वाली बातों से सावधान रहना चाहिए क्योंकि वह हमें परमात्मा से सच्ची प्राप्तियां करने नहीं देंगी।**

नंदूरबार। शिक्षा मंत्री डॉ.विजयकुमार गावित को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.विजया व ब्र.कु.राधा। साथ हैं एस.पी.डॉ.संजय।

नगर (भरतपुर)। सांसद रतनसिंह एवं विधायक अनिता सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.हीरा।

उस्मानाबाद। राज्यमंत्री पद्मसिंह पाटिल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुरेखा, भंसाली भाई, विनायकराव पाटिल तथा संतोष जाधव।

जोधपुर। सर्वधर्म सम्मेलन के अवसर पर महापौर रामेश्वर दधीच, उपमहापौर तथा ब्र.कु.शील बहन ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए।

मंदसौर। पर्यावरण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए आयुर्वेद चिकित्सक देवेन्द्र पुराणिक, श्रवण त्रिपाठी, ब्र.कु.समिता, ब्र.कु.हेमलता तथा अन्य।

दुमका। झारखण्ड के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.जयमाला। साथ हैं ब्र.कु.रेखा।